dqN dne ihNs---

dM+h la[;k& 7

vkys[k ,oa vuqla/kku& Mk- vuqjkx 'kekZ

¼laxhr ds lkFk dqN yksxksa dh galus dh vkokt+s---½

lquhy& galrs gq,& क्या रमेश तुम्हे तो लगता है कि पूरी दुनियां ही गड्ढे में जा रही है...

foosd& galrs gq,& ठीक कहा सुनील, पर सोचो किस गड्ढे में...गड्ढा भी तो इसी धरती में होगा तो धरती कहां खत्म हुई।

nksuksa tksj ls galrs gSa---

jes'k& ठीक है रमेश...विवेक मैं तुम्हारी तरह वैज्ञानिक नहीं हूं लेकिन पर्यावरण और समाजशास्त्र का विद्यार्थी जरूर रहा हूं। क्या तुम दोनो को वाकई में लगता है कि हमारे जीवन की दिशा ठीक है...

rHkh pwfM+;ksa vkSj di&IysV dh vkokt ds lkFk nks efgykvksa ds izos'k dk vkHkkl---

Lusgk& क्या हुआ, हम दोनों चाय बनाने क्या गई आप तीनों फिर से बहस करने लगे...

rHkh ?kaVh dh vkokt---

jkf/kdk& लो स्नेहा भाभी, लगता सृष्टि भी आ गई...मैं पानी लाती हूं...

Lusgk& क्या आज कोचिंग क्लास लंबी चली?

lquhy& आओ सृष्टि...तुम विवेक को तो जानती ही हो और ये भी बचपन का दोस्त रमेश है...मैने बताया था ना?

l`f"V& नमस्ते अंकल...नमस्ते अंकल...

jes'k& नमस्ते बेटा...पर एक बात बताओ तुम कोचिंग किस बात की ले रही हो,

l`f"V& अंकल मैं कोचिंग ले नहीं रही, बल्कि दे रही हूं...मैं जूलॉजी विषय पढ़ती हूं।

foosd& देखा रमेश ये भी हमारी टीम में की है...यानी विज्ञान की।

l`f"V& क्या चर्चा चल रही है अंकल? मैं जरा हाथ–मुंह धोकर आती हूं।

je'k& पर सुनील तुमसे ये किसने कहा कि जैविक पीछे की बात है...अरे जब पर्यावरण दूषित हो गया तब ही तो हम पारंपरिक ज्ञान की ओर मुड़े...वैज्ञानिकों को प्रयोग प्रयोगशाला में करने होते हैं लोगों पर नहीं?

food& अरे रमेश तुम तो नाराज हुए बैठे हो...चलो संयुक्त राष्ट्र के ससटेंनेबल डवलपमेंट गोल की बात करें तो पहली बात तुम्हे कैसे लगता है कि गरीबी दूर करना पहला लक्ष्य है?

Lugk& विवेक भइया वैसे तो गरीबी हर हाथ को काम देने से ही दूर होगी, लेकिन जिन लोगों ने अनाप–शनाप पैसा बटोर रखा है उनकी पूंजी भी तो नीचे तक जानी चाहिए।

jkf/kdk& ठीक कहा भाभी, पहले तो ये ही चर्चा हो कि गरीबी है क्यों?

je'k& राधिका भाभी, आपने ठीक कहा और ये बात भी सही है कि दुनिया में गैर–बराबरी बेइंतहा बढ़ी है। एक आंकड़ा कहता है कि दुनिया के एक फीसदी से भी कम लोगों के पास दुनिया की आधी से भी अधिक संपत्ती है।

luhy& रमेश ठीक कहा, पर ये तो सब जानते हैं पर क्या गरीबी दूर करने के लिए...हर हाथ को काम देने के लिए टेक्नोलॉजी की आवश्यकता नहीं है?

food& सही कहा सुनील...अब काम तो देना ही पढ़ेगा और गरीबों के संघर्ष को दूर करने के लिए टेक्नोलॉजी बेहद आवश्यक है।

je'k& गरीबी दूर करने के लिए नहीं बल्कि गरीब को गरीब रखने के लिए टेक्नोलॉजी की आवश्यकता है। देखो आज भी कृषि ही सबसे अधिक रोजगार दे रही है लेकिन किसान की हालत क्या है उसके लिए टेक्नोलॉजी जिम्मेवार नहीं है क्या?

lf"V& अंकल, टेक्नोलॉजी जिम्मेवार कैसे हुई?

je'k& अरे बेटी, बीज बाजार का, खाद बाजार की, ट्रैक्टर बाजार का, तेल बाजार का, ट्यूबवेल बाजार का तो खेती में लागत तो बढ़नी ही है और किसान पर कर्जा चढ़ना ही है और फिर उसकी हालत भी खराब होनी ही है।

food& पर फसल के दाम भी तो बढ़े हैं।

lquhy& हां, कुछ भी परफेक्ट नहीं होता इसलिए रिसर्च चलती रहती है और परिवर्तन होते रहते हैं।

lf"V& लेकिन पापा प्रकृति परफेक्ट ही है।

je'k& हां सृष्टि प्रकृति पूर्ण है। मानव के बार–बार असफल होने का कारण ही प्रकृति के विषय में अधूरा व अधकचरा ज्ञान ही है। अब देखो प्रचलित हरित क्रांति में आधुनिक विज्ञान विधि से जो प्रयोग हुए उनमें मशीन व रसायनों को महत्वपूर्ण माना गया। जीने का प्रयोजन, आवश्यकता, समझ व श्रम जैसी वास्तविकताओं की स्पष्ट जानकारी के अभाव में यह मान लिया गया कि कम से कम लागत व श्रम देकर अधिकतम उत्पादन करना विकास है।

jkf/kdk& हां शायद सही...क्योंकि सभी विज्ञान की देन हमारे श्रम को कम करके जीवन को सरल बनाने की कोशिश ही करती नजर आती हैं।

lquhy& तो रमेश तुम्हारा कहना है कि मानव में शारीरिक रूप से उपयोगी आवश्यकताओं की सतत पूर्ति के लिए प्राकृतिक उत्पादन विधि को समझकर कार्य करना खेती की आवश्यकता है।

je'k& हां सुनील। प्रकृति के साथ संबंध को समझना और जीना तो दूर की बात रही केवल इस पर ध्यान दिया गया कि सम्पूर्ण प्रकृति के संसाधनों को मनमानी पूर्वक इस्तेमाल कैसे किया जाए। जिस कारण प्राकृतिक उत्पादन व्यवस्था को आवेशित कर उत्पादन गति को बढ़ाने में शिक्षा, तकनीकी, औद्योगिकी आदि के सहारे मशीन व रसायनों का भरपूर प्रयोग किया गया।

Lugk& पर रमेश भइया इससे कृषि उपज तो बढ़ी ना, हमारे अन्न के गोदाम भी भरे हैं।

je'k& कुछ सही और कुछ गलत स्नेहा भाभी। आधुनिक कृषि पद्धति से मात्रात्मक रूप से उत्पादन में जो वृद्धि हुई उससे किसान और कृषि दोनों ही दिशाहीन होकर भारी संकट में हैं। भुखमरी, कुपोषण, बेरोजगारी के साथ–साथ भ्रष्टाचार जिस प्रकार बढ़ा है, प्रत्येक कार्य योजना असफल है। आर्थिक असंतुलन व प्राकृतिक स्तर पर जल प्रदूषण व विकिरण ने गहरे सवाल मानव जाति के सामने खड़े किए हैं।

lf"V& वैसे ठीक कहा अंकल एक तरफ धरती की तबाही तो दूसरी तरफ मंगल गृह पर बसने की लालक ने यह साफ किया है कि मानव ने अभी तक इस धरती के साथ जीने की वास्तविकता को नहीं समझा है।

l f"V& पर अंकल ईश्वर को लेकर लोगों की इस धारण में गलती क्या है।

je'k& गलती कुछ नहीं है लेकिन अधिकतर समस्याओं से समझौता है समाधान नहीं। मानव में इंसानियत व आचरण की जरूरत सभी को है फिर इसका अभाव क्यों? इस प्रकार, ईश्वर केन्द्रित विचारधारा में इच्छा व आवश्यकताओं के लिए कम से कम सुविधा संसाधनों के प्रयोग पर जोर दिया गया। त्याग एवं सेवा का तात्पर्य यही रहा कि अपने लिए कम से कम तथा दूसरों के लिए ज्यादा से ज्यादा करना। लेकिन क्या हो रहा है इसे हम सब जानते हैं।

food& बाबा रमेश, आपकी बात कुछ–कुछ तो समझ आ रही है लेकिन कुछ नहीं...खैर अपने समझाने के क्रम को आगे बढ़ाएं। lfEefyr gksa

je'k& अब पहली ईश्वर केन्द्रित अध्यात्मवाद के बाद दूसरी विचार धारा रही वस्तु केन्द्रित आधुनिकवाद का। इस विचारधारा में अधिकतम सुविधा भोग में सुख की तलाश रही जिसके लिए अधिकतम वस्तु संग्रह करना अनिवार्यता रही।

lquhy& हां ये बात तो ठीक है... इसलिए कम देकर ज्यादा से ज्यादा पाने के तरीके अपनाए गए। मानव ने प्रकृति के साथ इस विचारधारा से जो भी कार्य किए उनके केन्द्र में कम से कम देना व अधिकतम लेना मानसिकता रही।

l f"V& ठीक कहा पापा ये ही हाल खेती का हुआ, जितने पोषक तत्व लिए उतने दिए नही। कृषि उपज बढ़ने का कारण कृषि क्षेत्र में विस्तार होना है। सभी तरीकों को तकनीकी व प्रौद्योगिकी के साथ शोध–अनुसंधानपूर्वक शिक्षा का रूप भी दिया गया है।

je'k& हां सृष्टि बेटी और इस प्रकार मानव ने मानव के साथ तथा शेष प्रकृति के साथ शोषणपूर्ण जीना स्वीकार कर लिया। जिसके कारण संघर्ष, असुरक्षा, अभाव, शोषण व विश्वासघात को भी जीवन का हिस्सा मान लिया। बड़ी से बड़ी आधुनिकतम मशीनों के विषैले रसायनों को उत्पादन व लाभ के लिए जरूरत

लड़का–लड़की में समानता, साफ पानी और स्वच्छता, वहनीय स्वच्छ ऊर्जा और. ..

l f"V& और हर हाथ को काम और अच्छी आर्थिक उन्नति, उद्योग, नवाचार और इंफ्रास्ट्रक्चर, गैरबराबरी को कम करना, ससटेंनेबल शहर और समुदाय...

jkf/kdk& ससटेंनेबल शहर तो समझ आया जहां कूड़े के निपटारे से लेकर सभी व्यवस्थाएं ऐसी हों जिसमें टिकाऊपन हो और ये लोगों के जागरुक होने से हो भी रहा है लेकिन ससटेंनेबल समुदाय क्या? क्या समुदाय के लोगों में भी फर्क आ गया है?

je'k& हां राधिका भाभी, अब खुद ही सोचो कि क्या ये सच नहीं कि विचार–व्यवहार–व्यवसाय में विश्वासघात को जीवनशैली का हिस्सा मान लिया गया है। छल–कपट–दम्भ व पाखण्ड जैसी चालाकियों को समझ मान लिया गया...

lquhy& सच कहा रमेश, विश्वासघात ने अपराध, युद्ध व आतंकवाद का रूप लिया। भय और प्रलोभन में चलने वाली शासन प्रणाली सफल हुई। भय के लिए बनाए गए कठोर कानून आत्मघाती मानव बम के सामने चुप हो गए।

je'k& ठीक कहा सुनील अब देखो घोटालों में कितना धन–संग्रह किया जा है जिसकी कोई सीमा ही नही है घोटालेबाजों का लालच का बांध टूट गया है। ऐसा लगता है कि सारी धरती एक मानव का पेट नहीं भर पायेगी।

Lugk& पर रमेश भइया एक तरफ सभी विकास कार्य मानव व प्रकृति के शोषण आधारित हैं, दूसरी तरफ प्राकृतिक संसाधनों के बचाव का नाटक ही तो चल रहा है...

jkf/kdk& विवेक तुम रमेश की बातों को मज़ाक में ले रहे जबकि मुझे इसमें ऐसी बातें नज़र आ रही है जिस ओर मेरा ध्यान भी नहीं गया था।

lquhy& ठीक कहा राधिका, मुझे लग रहा है कि हमारा रमेश यूएन की तरह शिक्षा और ज्ञान में फर्क करने और हमारी सोच में बदलाव करने की ही बात कर रहा है। विवेक बात कभी भी विज्ञान के खिलाफ की नहीं है बल्कि विज्ञान में छुपे असली ज्ञान को समझने की है...क्यों रमेश।

je'k& सही कहा सुनील...ज्ञान ही तो सत्य है उसे झुठलाकर कितने समय हम टिक पाएंगे। मैंने जब प्रकृति, पर्यावरण पर कार्य शुरू किया तो वायुमंडल में ग्रीन हाउस गैस कार्बनडाइऑक्साइड का स्तर 280 पीपीएम यानी दस लाखवां हिस्सा था और कहा जाता था की 300 पीपीएम पर कई दिक्कतें आएंगी, फिर 350 पीपीएम की बात हुई, विध्वंस भी दिखा पर तथाकथित विकास की दौड़ में मानव रूका नहीं और आज...

lf"V& कार्बनडाइऑक्साड का स्तर करीब आठ लाख वर्ष पहले जो था उससे भी कई गुना अधिक 400 पीपीएम हो गया है...

jkf/kdk& ओह...विध्वंस की तैय्यारी...

lquhy& क्या तैय्यारी कर लोगे...प्रकृति तो अपना रौद्र रूप हमें दिखा ही रही है, कभी सूखा, तो कभी बाढ़, लगातार बढ़ते रोग...और फिर भी नहीं समझ रहे हैं।

food& पर इसमें शिक्षा का क्या दोष...मेरे ख्याल से दी गई शिक्षा का अनुसरण ना करना हमारे पर मंडराते खतरे का सबसे बड़ा कारण है।

je'k& विवेक, आधुनिकतावादी विधि से मानव में शरीर कलाओं को ज्ञान के केन्द्र में रखा गया है। पुस्तकों को पढ़ना–याद करना और कापी पर लिख देना ज्ञान के

उत्पादन प्रक्रिया को आवेशित किया गया था। मात्रात्मक वृद्धि एक स्थिति में पहुंचकर ठहर गई। किसानों को लागत खर्च बढ़ने लगा तथा उत्पादन में गुणवत्ता के स्तर पर गिरावट आई।

lf"V& ये सही है और इन सभी क्रियाकलापों से यह स्पष्ट है कि मानव जाति ने अपने लिए समस्याएं जान–बूझकर पैदा नहीं की है बल्कि सही जानकारी के अभाव में ऐसा हुआ है। परिवर्तन की चाह में कदम भी उठ रहे हैं। हरित क्रांति से अब सदाबहार की तैयारी है। luhy& इसलिए समाधान के लिए सभी को मिलकर विचार करने की जरुरत है। समस्याएं विकराल रुप ले चुकी हैं। इसलिए मुद्दों पर आन्दोलन खड़े करने से विरोध–मत में हार–जीत हो सकती है, समाधान नहीं।

je'k& लेकिन सबसे बड़ा प्रश्न आज भी सामने है कि समस्या की पीड़ा से बचा जाए या समस्या विहिन समाधान तलाशा जाए, भ्रष्टाचार व आतंकवाद जैसी समस्याओं के लिए रोज आन्दोलन खड़े किये जाएं – विधान में परिवर्तन किया जाए – पुतले फूंके जाए – कुछ समय के लिए राहत मिलती है लेकिन समस्या पहले से विकराल रुप लेकर सामने होती है। विश्वासघात–अपराध–युद्ध–आतंकवाद समस्या के बदले हुए नाम हैं, मूल में मानव–मानव के बीच विश्वास में कमी के लक्षण हैं और मूल रुप में समस्या मानव–मानव के बीच सम्बन्धपूर्वक जीने की समझ कम होने का परिणाम है।

food& रमेश शायद तुम ठीक कह रहे हो और यूएन के ससटेंनेबल डवलपमेंट गोल से इतना तो समझ आ ही रहा है कि जो भी था उसमें कुछ गड़बड़ है और विकास, शिक्षा, आवास, नवाचार, अर्थवस्वस्था, जैवविविधता, प्रदूषण आदि सभी विषयों को नई रोशनी में देखने की जरुरत है...पर इसमें विज्ञान का क्या दोष?

luhy& नहीं विवेक दोष विज्ञान का नहीं है...विज्ञान भी तो हमीं ने परिभाषित किया है, हमीं तो कार्य करते हैं, लेकिन हममे स्मृतियां है, सोचने की अधिक क्षमता है

असंतुलन होता है तथा जमीन भूखी होने से फसलों की जड़ों के आसपास दीमक व ग्रेब यानी सफेद गिडार की क्रियाशीलता से नुकसान होता है।

je'k& वाह सृष्टि पर सोचो भूखा क्या नहीं करता। हमने प्रयोग रूप में यह देखा है कि दीमक या अन्य इल्लियां जो जमीन में अवशेषों को खाते हैं वे भूमि को जीवांश कार्बन में वृद्धि कारक हैं तथा जब भी जमीन में जीवांश कार्बन कम होता है तभी उनका नुकसान भी दिखाई पड़ता है क्योंकि सभी का होनापन है सह–अस्तित्व, स्वयं का बनाये रखने की चेष्टा सभी में है।

luhy& कितना सच है कि प्राकृतिक उत्पादन व्यवस्था में नियम है, नियंत्रण है संतुलन है, कहीं पर भी विनाश नहीं है। विनाशक क्रिया करने से विकास नहीं होता बल्कि भयानक संकट पैदा होता है।

je'k& सोचो सुनील जंगल में मांसाहारी व शाकाहारी दोनों प्रकार के जीव हैं जिनसे किस प्रकार सह–अस्तित्व सजा है मानव जाति को उसका अध्ययन करने की आवश्यकता है। मांसाहारी कम खाते हैं तथा प्रजनन दर भी कम है, साथ ही शाकाहारी ज्यादा चरते हैं तथा इनकी प्रजनन दर भी ज्यादा है इसलिए कभी मांसाहारियों को भोजन का संकट नहीं रहता। साथ ही मांसाहारी के शरीर मांस व मल की गंध से अनेक कीड़े बीमारियों का नियंत्रण भी होता है जिसमें वनस्पतियां रोगमुक्त रहती हैं।

food& अब रमेश इस बात का वैज्ञानिक प्रमाण क्या है? ठीक है प्रकृति संग खेती आवश्यक है लेकिन क्या हम इतनी तेजी से बढ़ती आबादी का पेट पारंपरिक तरीकों से भर पाएंगे?

je'k& विवेक एक किसान ने ही मुझसे कहा कि आधुनिक विज्ञान ने तो प्रकृति के साथ युद्ध की मानसिकता से कार्य किया है। प्राकृतिक व्यवस्था को मनमानी पूर्वक अपने अनुकूल सुविधा के रूप में खोजना तथा व्यापार के लिए प्रस्तुत

आती थी आज अपने दंभ में वो भूल गया है लेकिन फिर पूरी सृष्टि के भले के लिए प्रकृति संग जीना पीछे जाना नहीं है बल्कि सदाबहार जीवन की ओर बढ़ना है।

lf"V& वाह रमेश अंकल आपने सही कहा सृष्टि के भले के लिए प्रकृति संग जीना पीछे हटना नहीं बल्कि आगे की ओर एक लंबी छलांग है और इस सृष्टि के भले के लिए अब एक कप चाय सभी के लिए हो जाए...

lc glrg---

समाप्त